कमी हिन्दीभाषियों में है हिन्दी में नहीं

योगेश चन्द्र जोशी
रूड़की

हिन्दी और संस्कृत मिलकर संपूर्ण कंप्यूटर जगत पर राज कर सकती हैं। वे इक्कीसवीं सदी की विश्व भाषा बन सकती हैं। जो भाषा कम से कम पिछले एक हजार साल से करोड़ों–अरबों लोगों द्वारा बोली जा रही है और जिसका उपयोग फ़िजी से सूरिनाम तक फैले हुए विशाल विश्व में हो रहा है, उस पर शब्दों की निर्धनता का आरोप लगाना शुद्ध अज्ञान का परिचायक है। यह बात सही है कि उसके पास फ्रांसीसी और अंग्रेजी की तरह सुललित, विविध और मानक कोश नहीं है लेकिन इसके लिए दोषी कौन है? क्या हिन्दी है? बिलकुल नहीं! उसके दोषी हम हिन्दी भाषी ही हैं।

क्या हिन्दी में कोई ऐसा जन्मजात खोट है कि वह भारत की राजभाषा नहीं बन सकती? क्या कमी है राजभाषा में? क्या उसके बोलने वाले बहुत कम हैं? क्या वह बहुत निर्धन भाषा है? क्या उसकी शब्द संपदा नगण्य है? क्या उसका अपना कोई व्याकरण नहीं है, लिपि नहीं है, इतिहास नहीं है, शास्त्र नहीं है? क्या नहीं है, हिन्दी के पास? हिन्दी के पास वह सब कुछ है, जिसके होने से कोई भी भाषा राष्ट्रभाषा और राजभाषा बनती है बल्कि उसके पास वे गुण भी हैं, जिनके कारण कोई भाषा राष्ट्रभाषा, अंतरराष्ट्रीय भाषा और विश्व भाषा बनती है।

जहां तक हिन्दी के बोलने और समझने वालों का प्रश्न है, हिन्दी आज दुनिया की नंबर एक भाषा है। दुनिया की कोई अन्य भाषा हिन्दी का मुकाबला नहीं कर सकती। दुनिया के अधिकतर देश अपनी मूल भाषा को ही श्रेष्ठतम् भाषा ही नहीं मानते है बल्कि सबसे बड़ी भाषा भी मानते हैं। अगर मान भी लिया जाए कि उनकी भाषा विश्व की सबसे बड़ी भाषा समझी जाती है तो किस आधार पर?

जो भाषा सिर्फ अपने ही देश में अधिकतर बोली जाए, उसे दुनिया की सबसे बड़ी भाषा कैसे माना जा सकता है? दुनिया के ज्यादातर देशों में आजकल इक्का–दुक्का प्रतिशत अन्य भाषाओं के ज्ञाता भी मिल जाते हैं। इनमें अगर भारत, श्रीलंका, घाना, सिंगापुर जैसे ब्रिटेन के पुराने गुलाम देशों के लोगों की संख्या भी जोड़ लें तो वह भी दस करोड़ से ज्यादा नहीं हो सकती है। खुद ही ब्रिटेन में कई ऐसे इलाके भी पाए जाते हैं, जहां पर अगर आप उनकी मूल भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा भी बोलें तो या तो लोग समझेंगे ही नहीं और अगर समझेंगे तो आपको उत्तर नहीं देंगे। अभी–अभी ब्रिटेन की वेल्श, स्कॉटिश और आयरिश भाषाओं ने सदियों से संघर्ष के बाद अपने–अपने क्षेत्रों से अन्य भाषा को अपदस्थ किया है।

इसी प्रकार अमेरिका में बसे लाखों लातिनी लोग हिस्पानी बोलते हैं। यही हाल जापान, विएतनाम, अफगानिस्तान और चीन से आकर बसे हुए अमेरिकियों का है। अकेले भारत में अधिकतर लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। पूरे ब्रिटेन में जितने लोग अपनी मूल भाषा बोलते हैं, उससे ज्यादा तो अकेले उत्तर प्रदेश में ही हिन्दी बोलते हैं। पूरा पाकिस्तान हिन्दी बोलता है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान और मध्य एशियाई गणतंत्रों में भी आपको हजारों से लेकर लाखों लोग हिन्दी बोलते और समझते हुए मिल जाएंगे। इसके अलावा फिजी, मॉरिशस, गुयाना, सूरिनाम, ट्रिनिडाड जैसे देश तो हिन्दी भाषियों के बसाए हुए ही हैं।

दुनिया भर में फैले हुए लगभग दो करोड़ भारतीय भी हिन्दी ही बोलते हैं। इसके अलावा दुनिया के लगभग डेढ़ सौ विश्वविद्यालयों में हिन्दी पढ़ाई जाती है। दूसरे शब्दों में, हिन्दी समाज

की जनसंख्या लगभग एक अरब का आंकड़ा छूती है। ऐसे में उसे संख्या के हिसाब से बलहीन बताना तथ्यों की अनदेखी करना है। सचाई तो यह है कि हिन्दी केवल अंग्रेजी से ही नहीं, चीनी भाषा से भी आगे है। चीन की "मंडारिन भाषा" (मानक चीनी) पूरे चीन में नहीं बोली जाती। जो भाषा लोग पेइचिंग में समझते हैं, वह शंघाई में नहीं समझते और जो शंघाई में समझते हैं, वह सियान में नहीं समझते हैं। हर जगह की चीनी भाषा अलग–अलग है। चीन की 90 अल्पसंख्यक जातियां भी चीनी भाषा नहीं बोलतीं। इसके अलावा हिन्दी की तरह चीनी भाषा दर्जन भर देशों में भी नहीं बोली जाती। उसकी लिपि इतनी कठिन है कि गैर–चीनी उसे आसानी से सीख नहीं पाते जबकि हिन्दी की लिपि सरल और वैज्ञानिक है। इसीलिए वह कई अन्य भाषाओं की भी लिपि है, जैसे संस्कृत, पालि, प्राकृत, मराठी, नेपाली आदि। देवनागरी में जैसा लिखा जाता है, वैसा ही बोला जाता है और जैसा बोला जाता है, वैसा ही लिखा भी जाता है।

यदि भारतीयों में स्वभाषा का अभिमान और ज्ञान होता तो हिन्दी की लिपि इंडोनेशिया, मलेशिया, म्यांमार तथा अफ्रीका और पश्चिमी एशिया के अनेक देशों की लिपि भी बन जाती। जो विश्व भाषा बनने में सक्षम है, वह हिन्दी आज अपने ही देश में प्रवासिनी बनी हुई है। हम हिन्दी भाषियों को भी यह पता नहीं कि हिन्दी कितनी संपन्न भाषा है। अंग्रेजी के मोटे–मोटे शब्दकोशों को देखकर हम अपने मन में यह धारणा बना लेते हैं कि हिन्दी के पास शब्दों का जबर्दस्त अभाव है। हिन्दी के पास मोटे–मोटे शब्दकोश नहीं हैं, इसका अर्थ यह नहीं कि शब्द नहीं हैं। जैसी शब्द–संपदा हिन्दी के पास है, दुनिया की किसी भी आधुनिक भाषा के पास नहीं है। हिन्दी दुनिया की सबसे समृद्ध भाषाओं में से है। हिन्दी संस्कृत की पुत्री कही जाती है।

हिन्दी जितने चाहे, उतने शब्द संस्कृत से ले सकती है। फारसी, अरबी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी और अंग्रेजी से भी ले सकती है और उन्हें अपने भीतर समाहित भी कर सकती है एवं काफी हद तक समाहित भी किया है। शब्दों में कैसा भेद–भाव? अकेली संस्कृत में लगभग दो हजार धातु हैं। एक धातु में दस प्रत्यय, तीन पुरुष, तीन वचन और बीस उपसर्ग आदि लगाकर यदि शब्द बनाना शुरू करें तो लगभग ग्यारह लाख शब्द बनते हैं। एक धातु से 11 लाख तो दो हजार धातुओं से कितने शब्द बन सकते हैं? लाखों नहीं, करोड़ों! यह सिर्फ कहने की ही बात नहीं, बल्कि यह सत्य भी है।

हिन्दी भाषी अपनी भाषा के प्रति जितने उदासीन हैं, शायद दुनिया में कोई और नहीं है। जिस भाषा को संविधान में भारत संघ की भाषा कहा गया है और राजभाषा का दर्जा दिया गया है, लेकिन देखा जाए तो उसे अन्य भाषाओं की अपेक्षा कम तवज्जों दी जाती है। संविधान निर्माताओं ने हिन्दी को कौन–सा अधिकार नहीं दिया? कौन–सा सम्मान नहीं दिया? लेकिन हिन्दी भाषी लोग अपने से यह सवाल क्यों नहीं पूछते हैं कि वे हिन्दी की अवहेलना क्यों करते हैं? भारत सरकार के हर कामकाज में पहले हिन्दी होनी चाहिए। जरूरी हो, मजबूरी हो तो अंग्रेजी का भी इस्तेमाल हो सकता है लेकिन असलियत में होता क्या है? भारत सरकार का सारा कामकाज मूल रूप से अंग्रेजी में होता है और हिन्दी में सिर्फ अनुवाद होता है। अगर संवैधानिक विवशता न हो तो अनुवाद भी गायब हो जाए।

अगर हम साहित्यकारों की कठिन हिन्दी की बात छोड़ दे तब भी इसका सरल–सहज रूप इतना प्यारा है कि देशज लोगों की बात तो छोड़िए विदेशियों को भी बड़ा भाता है और इसके प्रति मोह के चलते वे न सिर्फ हिन्दी बल्कि अच्छी हिन्दी सीखने के लिए जतन भी करते हैं। बहुत से विदेशी जो कृष्ण भक्त है अक्सर हिन्दुस्तान भ्रमण के लिए आते रहते हैं। पहली बार जब वे हिन्दी से परिचित होते है तो इन्हें हिन्दी के सरस उच्चारण से प्यार हो जाता है फिर क्या, कुछ तो अपना नाम तक हिन्दी भाषा में रख लेते है। नाम बदलने के साथ–साथ यह विदेशी लोग कच्ची–पक्की हिन्दी भी सीख लेते हैं। उनके मुंह से कच्ची हिन्दी के उच्चारण इतने मासूम लगते हैं जैसे किसी बालक के मुंख से तोतली भाषा।

कुछ इसी तरह विदेश से हिन्दुस्तान पढ़ने आए विद्यार्थियों के मुख से हिन्दी का उच्चारण सुनकर आप दंग रह जाएंगे। इतनी अच्छी हिन्दी बोलते हैं कि हम हिन्दी बोलने वाले भी उनके आगे फीके पड़ जाएं। उनका हिन्दी के प्रति स्नेह के चलते वे अच्छी हिन्दी सीखने का फैसला कर लेते हैं। अपने इस फैसले पर अडिग विदेशी उच्च व्याकरण की किताबों का अध्ययन करते हैं। ऐसे अनेक विदेशी हैं जो आपको टूटी–फूटी ही सही लेकिन हिन्दी बोलते नजर आ जाएंगे। हिन्दी के प्रति इनके प्रेम को देखकर लगता है कि हिन्दी भाषा हमेशा ही अजर–अमर रहेगी।

हम सब भारतीयों को यह संकल्प लेना चाहिए कि अपने निजी कामकाज में तो शत–प्रतिशत हिन्दी का प्रयोग करेंगे ही साथ ही सार्वजनिक कामकाज में भी हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के प्रयोग पर जोर देगें, तभी हम देश में अंग्रेजी के वर्चस्व को कम कर सकेगें। अंग्रेजी ने सिर्फ हिन्दी का हक नहीं मारा है, उसने समस्त भारतीय भाषाओं को ठेस भी पहुंचाई है। यदि अंग्रेजी को उसकी सही राह दिखानी है तो समस्त भारतीय भाषाओं को एकजुट होना होगा और समस्त भारतीय भाषाएं तब तक एकजुट नहीं होंगी जब तक कि हिन्दीभाषी लोग खुद नहीं जागेंगे।